खण्ड–(क)

1. (क) जिस प्रकार नदियों में उठने वाला पानी का भवर नदी में हलचल उत्•न्न कर देता है, उसी ⁊कार स्मृतिया भी जीवन में आकर जीवन में हलचल कर देती हैं। वर्तमान जीवन की •रिस्थितिया, व्यथा, आदि बेचैन कर देती है।

(ख) जिस ⁊कार दुश्मन हर समय व्यक्ति को नुकसान, तकलीफ •हुचाने के के लिए समय का इंतजार करता हुआ, तैयारी में रहता है उसी ⁊कार यादें भी वर्तमान जीवन को घाव देती हुई लौट आती है। इसलिए यादों को जानी–दुश्मन के समान माना है।

(ग) शरीर में धसा हुआ काच शरीर से रक्त निकलने तथा दर्द का एहसास करवाता है, उसी ⁊कार यादें भी बीती हुई, दर्द भरी घटनाओं से •रिचित करवाती हुई वर्तमान जीवन में हलचल •ैदा करती हैं।

(घ) भूतकाल में बीते हुए समय तथा यादों में कुछ भी •रिवर्तन किया जाना संभव नहीं है। स्मृतिया स्थायी नहीं रहती हैं। उसके बारे में कुछ भी कहना न्याय के सामने खड़े करने जैसा हैं।

2. (i) जब व्यक्ति भावों को व्यक्त करता हुआ केवल बोलता ही रहता है। वह दूसरों को बिल्कुल भी सुनना नहीं चाहता है इस ⁊कार अधिक बोलने की कला, अनसुना करने की कला में विकसित हो जाती है।

(ii) अधिक बोलने वाले अभिभावकों के कारण बच्चों के मन में सही–गलत से जुड़ा स्वाभाविक ज्ञान कम विकसित हो •ाता है क्योंकि अधिक बोलना बातों को विरोधाभासी तरीके से सामने रखता है, वह कुछ भी नहीं बोल •ाता।

(iii) अधिक बोलना इन बातों का सूचक है कि व्यक्ति स्वयं के बारे में ज्यादा सोचता है तथा दूसरों के बारे में कम।

(iv) अमेरिका के सर्वाधिक चर्चित राष्ट्रपति रूजवेल्ट अपने माली तक के साथ कुछ समय व्यतीत करते तथा उसकी अधिक से अधिक बातों को सुनने की कोशिश करते। यही उनकी लोक⁊ियता का कारण बताया है।

(v) ''हम सुनना चाहते ही नहीं'' अर्थात इस •ंक्ति का आशय है कि हम लोग केवल बोलना चाहते है ; जिससे कि लोग हमारी बातों को बेहतर तरीके से समझेंगे। बातें कोई भी हो, हम उनकी बातो को अनसुना कर लगातार बोलते हुए उन •र हावी होना चाहते हैं।

(vi) महात्माओं व विद्वानों की सबसे बड़ी विशेषता है– ''दूसरों की आवाज को ध्यान से सुनना। लेकिन यह सत्य है कि वर्तमान में हम केवल बोलना चाहते है। हम स्वयं के बारे में अधिक सोचते हैं, दूसरों के बारे में कम। इसलिए हमें दूसरों की बातों को भी ध्यान •ूर्वक सुनना चाहिए, यही लोक⁊ियता का सूचक है।

खण्ड–(ख)

3. (i) वणो का सार्थक, व्यवस्थित तथा क्रमबद्ध समूह शब्द कहलाता है। जब तक वह व्याकरण के नियमों से युक्त नहीं होता तब तक कोई भी शब्द स्वतंत्र रहता है। जैसे– राम, श्याम, मोहन, आगरा, ताजमहल आदि।

(ii) शब्द वाक्य में ⁊युक्त होने •र •द में •रिवर्तित हो जाता है, क्योंकि वह व्याकरण के विभिन्न कारकों (लिंग,वचन,कारक) आदि से संबंधित होता है, इसलिए •द कहलाता हैं।

4. (i) मैंने एक बहुत बीमार व्यक्ति को देखा।

उ. मैंने एक व्यक्ति को देखा और वह बहुत बीमार था।

(ii) यद्य• वह बहुत मेहनती है फिर भी सफल नहीं हो सका।

उ. मिश्र वाक्य

(iii) शरीर से कमजोर व्यक्ति के लिए यह ⁊तियोगिता नहीं है।

उ. जो व्यक्ति शरीर से कमजोर है, उसके लिए यह ⁊तियोगिता नहीं है।

5. (क) समास विग्रह कर समास का नाम लिखो।

(i) जनहित – जनता का हित (संबंध तत्•ुरूष)

(ii) मधुरफल – मधुर (मीठा) है जो फल (कर्मधारय समास)

(ख) समस्त पद बनाकर समास का नाम लिखिए।

(i) स्वप्न देखने वाला : स्वप्नदर्शी (कर्मधारय समास)

(ii) अपनी रक्षा : आत्मरक्षा (अव्ययीभाव समास)

6. (क) एक कप गर्म चाय पी लो। (ख) उससे हमारी बात हो गयी है।

(ग) यहा केवल दो •ुस्तकें रखी हैं। (घ) वह तुमसे भली भाँति परिचित है।

7. (i) पानी–पानी होना : शर्मिन्दा या लज्जित होना।

वाक्य में प्रयोग – पिताजी ने राम को स्कूल में सभी के सामने डाँटा या फटकारा तो राम पानी – पानी हो गया।

(ii) सिर •र कफन बाधना :– ⁊त्येक •रिस्थिति या चुर्नातियों का सामना करने हेतु तैयार होना।

वाक्य में ⁊योग – कारगिल युद्ध में भारतीय सैनिक दुश्मनों से मुकाबला करने के लिए सिर •र कफन बाध कर निकले हैं।

खण्ड–(ग)

8. (क) ऑचुमेलौव की दो चारित्रिक विशेषताए निम्न है–
(i) ऑचुमेलॉव स्वार्थी, चा•लूस ›वृत्ति का व्यक्ति था।
(ii) उसका स्वभाव गिरगिट की तरह बदलने वाला अर्थात •रिस्थिति वश अ•ने विचारों •र कायम न रहने वाला या मुकरने वाला व्यक्ति था।
(ख) ''अब कहा दूसरे के दुःख से दुःखी होने वाले'' •ाठ के आधार •र बताया है वर्तमान समय में समुद्र के क्षेत्र–विशेष में कमी या न्यूनता आना ही समुद्र के गुस्से का कारण था। समुद्र के जल–क्षेत्र में न्यूनता तथा समुद्र का सिकुड़ना दोनों ही इसके प्रमुख कारण रहे।
इसी कारण उसने अ•ना गुस्सा कुछ सालों •हले मुंबई में ›दर्शित किया। समुद्र के किनारे बसी हुई बड़ी–बड़ी इमारतों को तहस–नहस कर दिया। उस समय •ानी में चल रहे तीन जहाजों को वर्ली, गेट–वे ऑफ इंडिया जैसे– तीन अलग–अलग स्थानों •र फेंका, जो सैलानियों का नज़ारा बने।
(ग) सआदत अली अवध के नवाब आसिफउददौला का भाई था। वह ऐशो–आराम से जीने वाला तथा अंग्रेजों के •क्ष का व्यक्ति था। इसलिए कर्नल उसे अवध के तख्त •र बैठाना चहते थे ताकि अंग्रेजों का अवध •र भी आधि•त्य हो जावें।

9. लेखक यह कहना चाहता है कि सभी मनुष्यों के मन में •शुओं, •क्षियों, समुद्र, •हाड़ तथा ›कृति के ›ति सम्मान का भाव उत्पन्न हो सके। ›ाचीन समय में लोग स्वार्थ को भूलकर •रो•कार को महत्व देते थे। जैसे •ाठ में शेख अयाज़ के ि•ता, नूह नाम ैगम्बर, चींटीयों की रक्षा करते हुए सुलेमान तथा लेखक की मा का जिक्र किया। इन्होंने किसी न किसी माध्यम से जीव–जंतुओं, •क्षियों ›कृति के ›ति ›ेम व करूणा का भाव दर्शाया है।
लेकिन वर्तमान समय में दूसरों के दुःख से दुःखी होने वाले लोग बहुत कम मिलते हैं। •हले मनुष्य सारे संसार को एक परिवार के रू• में मानता था। खूले आगन में रहता था। धीरे–धीरे स्वयं को सीमित दायरों में (छोटे–छोटे घरों, फ्लेट्स) कैद करना शुरू कर दिया है।
मनुष्य ने अ•ने नीजी स्वार्थ के कारण ›कृति में दखल व खलल करना शुरू किया। वनों का दोहन भयंकर रू• से होने लगा। •शु–•क्षी बेघर होने लगे। बेवक्त की बरसातें तथा गर्मी की तीव्रता बढ़ने लगी। वर्तमान मनुष्य सं•ूर्ण रू• से स्वार्थ के वशीभूतहो गया है उसे दूसरों के दुख से कोई लेना–देना नहीं हैं।

10. (क) मनुष्य–जाति ने आज तक अ•नी बुद्धि का ›योग अ•ने हित तथा स्वार्थ में किया है। उसने ›कृति का अत्यधिक रू• में दोहन किया है। उसने नदी, समुद्र, वन, •हाड़, जीव–जन्तुओं, •क्षियों आदि से अधिक महत्व मनुष्य जाति को दिया है। उसने समुद्र की जगह हथियाई, जंगलों व •हाड़ों का काटा। नई–नई इमारते बनाकर अ•नी बुद्धि से ›कृति में बड़ी–बड़ी दीवारें खडत्री कर दी।
(ख) •हले मनुष्यों में •रिवार की भावना थी। सभी एक–दूसरे को समान तथा आत्मीयता के साथ देखते थे। लेकिन अब मनुष्य स्वार्थ के वशीभूत होकर व्यक्तिगत जिंदगी जीने लगा है। स्वयं को छोटे–से दायरे में कैद कर लेना, छोटे–से घर में अपनी अलग खिचड़ी •काना, तथा समाज से संबंध न रखना।
(ग) लेखक के अनुसार यह धरती किसी एक की नही है। बल्कि धरती •र सभी का समान रू• से अधिकार है। इस •र मानवों का ही नहीं अि•तु •क्षी, •शु, नदी, •र्वत, समुद्र सभी का बराबर अधिकार है।

11. (क) बिहारी ने ›भु की ›ाप्ति में एकाग्रचित्त होकर, ध्यान–मग्न होकर बिना किसी बाहरी आडंबर के भक्ति करने वालों को साधक तथा मन का अस्थिर होकर, माला ज•ने, शरीर •र चंदन लगाने, माथे •र तिलक लगाने जैसे – साधनों को बाध ाक बताया है।
(ख) कवयित्री के लिए ›भु ही सर्वस्व है, वे ही उसके जीवन के उद्देश्य के रू• में है अतः वह अ•ने हृदय में उस ›भु के ›ति आस्था और भक्ति का भाव जगाए रखना चाहती है। इसलिए वह अ•ने आस्था रू•ी दी•क को मधुरता, ›सन्नता , निर्भयता, ›ूर्वक जलते रहने के लिए कह रही है।
(ग) ''कर चले हम फिदा'' गीत सन् 1962 में हुए भारत–चीन युद्ध की ऐतिहासिक ृष्ठभूमि •र आधारित है। चीन ने तिब्बत की ओर से भारत •र आक्रमण किया। उस युद्ध में भारतीय सैनिकों ने कठिन •रिस्थितियों में मुकाबला किया था।

12. 'आत्मत्राण ' कविता में कवि स्वयं अ•ने बल •र दुःखों को दूर कना चाहते हैं। वह दुःखों से मुक्ति नहीं चाहता, बल्कि दुखो को सहने तथा उबरने की आत्मशक्ति चाहता है।
हम दुखो को निड़र होकर सहन करें, उन •र विजय ›ाप्त करें, आस्थावान बने रहें। हम दुखों से क्षुब्ध होकर टूटे न, रोए न , निराशावादी न बनें, •रमात्मा के ›ति संदेह और क्षोभ से न भरे। सुख में भी •रमात्मा को याद रखना, धन्यवाद देना तथा उनके ›ति विनय ›कट करना न भूलें।

13. टोपी का लगाव इफ्फन की दादी से इसलिए था क्योंकि वह हर समय टोपी की सहायता करती, उसे कहानियाँ सुनाया करती थी। वह हमेशा टोपी का ही पक्ष लेती थी। दादी की भाषा व बोली टोपी को अच्छी लगती थी। वह भी उसी बोली में बोलने लगा था।
टो•ी और इफ्फन की दादी अलग–अलग धर्म, जाति व मजहब के थे। मगर दोनो अटूट रिश्ते में बधे थे। ›ेम किसी भी जाति या बंधन को नही मानता है। इफ्फन की दादी के आचल में कहानिया सुनते हुए टो•ी अ•ने दुख–दर्द, अकेले•न को भूल जाता था। दादी को भी टोपी के साथ अपनेपन या आत्मीयता का एहसास होता था।

खण्ड–(घ)

14. **(स्व विवेक व ज्ञान के अनुसार हल करना है।)**

15. बी–357, शास्त्रीनगर
भरतपुर, (राज.)
08 मार्च, 2016
सेवा में,
श्रीमान् प्रबन्धक महोदय,
नेशनल बुक ट्रस्ट,
जयपुर (राज.)

विषय–हिन्दी भाषा में नवीनतम बाल साहित्य की ुस्तकें भेजने हेतु।

महोदय

उ•युक्त विषयान्तर्गत आ•से अनुरोध है कि मैं नियमित रू• से आ•के ट्रस्ट से ुस्तकें मगवाता रहता हू। मुझे हिन्दी में ्काशित नवीनतम् संस्करण वाली बाल–साहित्य से संबंधित ुस्तकों की आवश्यकता है ; अतः भेजने की कृ•ा करें। कटी–फटी होने •र ुस्तके लौटा दी जाएगी, जिनके व्यय–भार का उत्तर दायित्व आ•का होगा।

भवदीय
राहू शर्मा

16. **सवांद का वर्णन (स्व विवेक व ज्ञान के अनुसार हल करना है।)**

दिशा डेल्फी ग्लोबल सीनियर सैकण्डरी स्कूल, कोटा (राजस्थान)
''वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन''

दिनांक : 08 मार्च 2016 **सूचना**

विद्यालय के सभी विद्यार्थियों का सूचित किया जाता है कि दिनांक 10 मार्च 2016 जूनियर व सीनियर विद्यार्थियों के लिए हिन्दी वाद–विवाद प्रतियोगिता का दो अलग–अलग स्तर पर आयोजन किया जा रहा है। जो भी विद्यार्थी भाग लेना चाहता है, वह अ•ना नाम कक्षाध्या•क को लिखवा दें।

्थम ुरस्कार 2500 , द्वितीय ुरस्कार 1500, तृतीय ुरस्कार 1000 तथा अन्य ्तिभागियों को ्शंसा •त्र ्दान किए जाऐंगे।

17.

आज्ञा से
सुरेश गोयल
सचिव साहित्य क्लब

विज्ञापन
''मकान बेचना है''

18.

– मकान का क्षेत्रफल 1000 वर्गफुट।
– 4 बी.एच.के., तथा सं•ूर्ण फर्नीचर युक्त।
– यातायात संबंधी सुविधा, विद्यालय, •ार्क, •ाकिंग की सुविधाओं से युक्त।
– नल व बिजली 24 घंटे उपलब्ध।
– मकान की लागत 35 लाख लगभग।

इच्छुक व्यक्ति नीचे दिए हुए •ते •र सं•र्क करें : –
बी–357 , महावीर नगर तृतीय, सेक्टर–7 कोटा (राज.)